CHAPTER 51

SANSKRIT

Doctoral Theses

601. अनु कुमारी
ज्योतिषशास्त्र में वृद्धयवनजातकम् का योगदान।
निर्देशिका : डॉ. पुनीता शर्मा
Th 22592

विषय सूची

1. यवनाचार्य व्यक्तित्व एवं कृतित्व 2. राशि-प्रभेद 3. आधान परिचय व दशा विचार 4. अष्टक वर्ग 5. ग्रहदृष्टि फल। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रन्थ सूची।

602. आर्या (मोहिनी)
उत्तरपाणिनीय व्याकरण-सम्प्रदायों में कृत् प्रत्यय : एक अध्ययन।
निर्देशिका : डॉ. शन्नो ग्रोवर
Th 22111

विषय सूची

1. संस्कृत व्याकरणशास्त्र : एक परिचय 2. कृत् तथा कृत्प्रकरण : परिचय 3. कृत् प्रत्यय : एक तुलनात्मक समन्विति 4. कृत् प्रत्ययगत अनुबन्ध समीक्षा 5. कृत प्रत्यय : अर्थ विश्लेषण 6. पाणिनीयेतर व्याकरणों में प्रयुक्त नवीन शब्दों एवं उनका साहित्य में प्रयोग । निष्कर्ष । सन्दर्भ ग्रन्थ सूची।

603. आर्या (सुमन)
ब्राह्मण ग्रन्थों में प्रतिबिम्बित अर्थव्यवस्था : एक समीक्षात्मक अध्ययन।
निर्देशिका : डॉ. वीना रानी मल्होत्रा
Th 22594

विषय सूची

1.विषय प्रवेश 2. अर्थ का महत्त्व 3. कृषि व्यवस्था 4. पशुपालन 5. उद्योग 6. व्यापार 7. आधुनिक परिप्रेक्ष्य में ब्राह्मणग्रन्थकालीन आर्थिक विचारों की प्रासंगिकता। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रन्थ सूची।

604. गुप्ता (आयुष)
प्रशस्तपादभाष्य पर व्योमवती टीका के द्रव्य प्रकरण का समीक्षात्मक अध्ययन।
निर्देशक : डॉ. आशुतोष दयाल माथुर
Th 22591

सारांश

वैशेषिक सूत्र को विस्तार से समझने हेतु प्रशस्तपादभाष्य का अध्ययन नितान्त आवश्यक है।यह शोध प्रबन्ध प्रशस्तपादभाष्य की सबसे प्राचीन टीका व्योमवती से सम्बन्धित है।वैशेषिक दर्शन में सात पदार्थ के रूप में क्रमशः द्रव्य ,गुण, कर्म, सामान्य,विशेष,समवाय तथा अभाव स्वीकृत हैं।इन सात पदार्थों में प्रथम पदार्थ के रूप में स्वीकृत द्रव्य ही इस शोधकार्य का मुख्य विवेच्य विषय है।द्रव्यों की वैशेषिकसम्मत संख्या 9 हैं।अध्यायक्रम से विवेचन के क्रम मेंप्रथम अध्याय-'वैशेषिक दर्शन तथा व्योमवती' के अन्तर्गत वैशेषिक सूत्रों से लेकर व्योमवती तक के क्रमिक विकास तथा ऐतिहासिक विवरण का परिचय दिया गया है।द्वितीय अध्याय-'निःश्रेयस विचार' के अन्तर्गत निःश्रेयस के वैशेषिक सम्मत व्याख्या की स्थापना हेतु अन्य दर्शनों के निःश्रेयस सम्बन्धी विचारों का खण्डन किया गया है।तृतीय अध्याय-'द्रव्य विचार' के अन्तर्गत द्रव्य की सत्ता सिद्धि,कल्पना ज्ञान का खण्डन तथा द्रव्य साधर्म्य का विवेचन किया गया है।चतुर्थ अध्याय-'पृथ्वी,जल,तेज तथा वायु' में क्रमशः पृथ्वी,जल,तेज तथा वायु का वैधर्म्य स्पष्ट करके इनके लक्षणों तथा विशेषताओं का वर्णन किया गया है।इसके पश्चात क्रमशः इनके गुणों एवं भेदों का वर्णन है।पञ्चम अध्याय-'आकाश' के अन्तर्गत आकाश का सामान्य परिचय,आकाश का लक्षण तथा आकाश के गुण का वर्णन प्राप्त होता है।षष्ठ अध्याय-'काल एवं दिक्' में इन द्रव्यों का सामान्य परिचय, लक्षण,पूर्वापरादि प्रत्यय तथा इन प्रत्ययों से सम्बन्धित अनेक अवधारणाओं पर पूर्वपक्ष के विचार एवं उनके खण्डन का विवेचन किया गया है।सप्तम अध्याय-'आत्मा' आत्मतत्व का सामान्य परिचय, लक्षण,आत्मा का सौक्ष्मत्व,बाह्येन्द्रियग्राह्यता का खण्डन तथा आत्मा के गुणों का वर्णन करके उसके जीवात्मा तथा परमात्मा इन दो भेदों का उल्लेख है।अष्टम अध्याय-'मनस्' के अन्तर्गत मनस् तत्व का सामान्य परिचय,मन की सिद्धि,लक्षण, मन की सापेक्ष कारणता,मन के गुण आदि विषयों का विस्तृत विवेचन प्राप्त होता है।इस प्रकार यह शोधप्रबन्ध वैशेषिक दर्शन में वर्णित सभी द्रव्यों का भली भाॅति विवेचन प्रस्तुत करता है।

विषय सूची

1. वैशेषिक दर्शन और व्योमवती टीका 2. निःश्रेयस विचार 3. द्रव्य-विचार 4. पृथिवी, जल, तेज तथा वायु 5. आकाश 6. काल एवं दिक् 7. आत्मा 8. मनस्। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रन्थ सूची।

605. त्यागी (अंकुर)

साङ्ख्यतत्त्वकौमुदी पर शिवनारायण कृत सारबोधिनी टीका का अध्ययन।

निर्देशक : डॉ. पंकज कुमार मिश्र

Th 22114

सरांश

प्रकृत शोधप्रबन्ध आठ अध्यायों में विभाजित है जो कि इस प्रकार है -1. सारबोधिनी की पृष्ठभूमि 2. तत्त्वमीमांसा 3. प्रमाणमीमांसा 4. कार्यकारणवाद 5. प्रकृतिनिरूपण 6.पुरुषनिरूपण7. सृष्टिविज्ञान 8. मुक्तिमीमांसा सांख्यमत की सैद्धान्तिक उपसंहार . व्याख्या प्रस्तुत करनेवाले आधुनिक टीका ग्रन्थों में शिवनारायणशास्त्रीकृत सारबोधिनी टीका अत्यन्त आदरणीय है। यह एक अपठित तथा अदृष्ट टीकाग्रन्थ था। सांख्यदर्शन के सारे मान्य सिद्धान्तों की स्थापना इस टीका में खण्डनमंडन पद्धति से की गयी - है। इसकी भाषा सरल और सुलझी है तथा विशद बोध कराने में पूर्णतः सक्षम है। इनकी शैली, सारे शास्त्रों के साथ विषय का सामञ्जस्य स्थापित करने में सहायक है।इन्होंने कतिपय स्थानों पर की भाषा का 'नव्य न्याय' प्रयोग भी किया है।कतिपय स्थानों पर वाचस्पति मिश्र के अतिसंक्षिप्त कथ्यों की इन्होंने विस्तारपूर्वक व्याख्या की है।शिवनारायण प्रायः स्वमत का उल्लेख न करते हुए वाचस्पति मिश्र के मत की ही स्वसमर्थन पूर्वक व्याख्या करते हैं।

विषय सूची

1. सारबोधिनी की पृष्ठभूमि 2. तत्त्वमीमांसा 3. प्रमाण-मीमांसा 4. कार्यकारणवाद 5. प्रकृति निरूपण 6. पुरुष निरूपण 7. सृष्टि-विज्ञान 8. मुक्ति मीमांसा । उपसंहार। सन्दर्भ ग्रन्थ सूची।

606. तोसावड़ा (सुरेन्द्र कुमार)

काश्मीर शैव दर्शन के सन्दर्भ में शिवदृष्टि का मूल्यांकन।

निर्देशिका : डॉ. रमा जैन

Th 22103

विषय सूची

1. शिवदृष्टि में प्रतिपादित तत्त्वमीमांसा 2. शिवाद्वैतेतर अद्वैतवादी अवधारणाओं का प्रत्याख्यान 3. शिवदृष्टि सम्मत सृष्टि विचार 4. शिवदृष्टि सम्मत मोक्ष प्रक्रिया 5. सोमानन्द का काश्मीर शैव दर्शन में योगदान । उपसंहार। सन्दर्भ ग्रन्थ सूची।

607. दुबे (अर्पित कुमार)
कारक एवं विभक्तिसूत्रों के व्याख्यानों में विद्यमान विसंगतियां एवं उनका समाधान।
निर्देशक : डॉ. ओमनाथ बिमली
Th 22104

विषय सूची

1. कारक-विमर्श (कारके सूत्र विचार) 2.कर्त्ता-कारक 3. कर्म-कारक 4. करण एवं सम्प्रदान-कारक 5. अपादान एवं अधिकरण-कारक 6. कारक विभक्ति 7. उपपद-विभक्ति । उपसंहार। सन्दर्भ ग्रन्थ सूची।

608. धर्मेन्द्र कुमार
पाणिनीय व्याकरण एवं मीमांसा के अतिदेश वाक्यों का समालोचनात्मक अध्ययन।
निर्देशक : डॉ. सत्यपाल सिंह
Th 22109

विषय सूची

1. पाणिनीय व्याकरण एवं मीमांसा दर्शन का संक्षिप्त परिचय 2. शास्त्र तथा लोक परम्परा में अतिदेश का स्वरूप 3. पाणिनीय व्याकरण में अतिदेश का स्वरूप 4. अष्टधा अतिदेशों की समालोचना 5. मीमांसा दर्शन में अतिदेश का स्वरूप 6. पाणिनीय व्यकरण एवं मीमांसा के अतिदेश वाक्यों का तुलनात्मक अध्ययन । उपसंहार। सन्दर्भ ग्रन्थ सूची।

609. प्रसाद (ज्वाला)
समकालिक संस्कृत कथा-साहित्य में राधावल्लभ त्रिपाठी का योगदान।
निर्देशिका : डॉ. मीरा द्विवेदी
Th 22589

विषय सूची

1. राधावल्लभ त्रिपाठी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व 2. आधुनिक संस्कृत साहित्य की प्रवृत्तियाँ 3. राधावल्लभव रचित लघुकथाओं की समीक्षा 4. राधावल्लभ रचित कथाओं की समीक्षा 5. राधावल्लभ रचित उपन्यासों की समीक्षा। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रन्थ सूची।

610. पवार (स्नेहलता)
पण्डित गोपेश कुमार ओझा का भारतीय ज्योतिषशास्त्र को योगदान।
निर्देशिका : डॉ. पुनीता शर्मा
Th 22107

विषय सूची

1. भारतीय ज्योतिषशास्त्र और पण्डित गोपेश ओझा 2. पं. गोपेश कुमार ओझा का जातकशास्त्र में योगदान 3. पं. गोपेश कुमार ओझा द्वारा वर्णित प्रश्नशास्त्र के विषय 4. पं. गोपेश कुमार ओझा का

मुहूर्तशास्त्र में योगदान 5. पं. गोपेश कुमार ओझा का सामुद्रिक शास्त्र में योगदान। निष्कर्ष। सन्दर्भ ग्रन्थ सूची।

611. पाठक (ऋषिराज)
सामवेद के स्वरों का ध्वनिवैज्ञानिक, अर्थवैज्ञानिक एवं संगीतशास्त्रीय अध्ययन।
निर्देशक : डॉ. ओमनाथ बिमली
Th 22101

विषय सूची

1. प्ररोचना 2. सामवेद : एक परिशीलन 3. स्वर की अवधारणा और सामवेद का परिप्रेक्ष्य 4. साम की अच्-ध्वनियों तथा गान-स्वरों का ध्वनिवैज्ञानिक पक्ष 5. साम के उदात्तादि स्वरों का अर्थवैज्ञानिक पक्ष 6. साम-स्वर और साम-संगीत। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रन्थ सूची।

612. पाण्डेय (पीयूष)
बृहत्त्रयी में ज्योतिषतत्त्व।
निर्देशक : डॉ. रणजीत कुमार मिश्र एवं प्रो. देवीप्रसाद त्रिपाठी
Th 22593

विषय सूची

1. बृहत्त्रयी का सामान्य परिचय 2. ज्योतिष-तत्त्व विवेचन 3. किरातार्जुनीयम् में ज्योतिष-तत्त्व 4. शिशुपालवधम् में ज्योतिष-तत्त्व 5. नैषधीयचरितम् में ज्योतिष-तत्त्व। निष्कर्ष। सन्दर्भ ग्रन्थ सूची।

613. बंसल (सीमा)
आगम परम्परा के आलोक में योगोपनिषदों में प्रतिपादित दर्शन।
निर्देशिका : डॉ. पवन कुमारी
Th 22588

विषय सूची

1. आगम परम्परा एवं योगोपनिषद् : सामान्य परिचय 2. तत्त्वमीमांसा 3. योग साधन के सोपान 4. योग के विविध प्रकार 5. मुक्ति मीमांसा । निष्कर्ष । सन्दर्भ ग्रन्थ सूची।

614. भारद्वाज (अनिरुद्ध)
संस्कृतव्याकरणशास्त्र के संदर्भ में पाश्चात्य विद्वानों का चिंतन।
निर्देशक : डॉ. ओमनाथ बिमली
Th 22112

विषय सूची

1. संस्कृत व्याकरणशास्त्र की आधुनिक पाश्चात्य अध्ययन-परम्परा 2. संस्कृत व्याकरणशास्त्र का संरचनात्मक स्वरूप 3. संस्कृत व्याकरणशास्त्र का कारक-तन्त्र 4. संस्कृत व्याकरणशास्त्र का तिङन्त प्रकरण 5. संस्कृत व्याकरणशास्त्र का सुबन्त प्रकरण 6. संस्कृत व्याकरणशास्त्र का कृदन्त प्रकरण 7. संस्कृत व्याकरणशास्त्र का तद्धितान्त प्रकरण 8. संस्कृत व्याकरणशास्त्र के प्रकीर्ण विषय 9. संस्कृत व्याकरणशास्त्र एवं आधुनिक पाश्चात्य भाषाविज्ञान 10. संस्कृत व्याकरणशास्त्र एव पाश्चात्य शब्ददार्शनिक विमर्श । उपसंहार। सन्दर्भ ग्रन्थ सूची।

615. मिश्रा (रीतू)
मानवश्रौतसूत्र की याज्ञिक प्रक्रिया का विश्लेषण (वर्तमान सन्दर्भ में)
निर्देशिका : प्रो. शारदा शर्मा
Th 22113

विषय सूची

1. मानवश्रौतसूत्र एवं श्रौतयज्ञ-प्रक्रिया 2. मानवश्रौतसूत्र में दर्शपौर्णमास की याज्ञिक-प्रक्रिया का विश्लेषण 3. मानवश्रौतसूत्र में अग्न्याधान की याज्ञिक-प्रक्रिया का विश्लेषण 4. मानवश्रौतसूत्र में पुनराधान की याज्ञिक-प्रक्रिया का विश्लेषण 5. मानवश्रौतसूत्र में अग्निहोत्र की याज्ञिक-प्रक्रिया का विश्लेषण 6. मानवश्रौतसूत्र में अग्न्युपस्थान की याज्ञिक-प्रक्रिया का विश्लेषण 7. मानवश्रौतसूत्र में आग्रायणेष्टि की याज्ञिक-प्रक्रिया का विश्लेषण 8. मानवश्रौतसूत्र में चातुर्मास्य की याज्ञिक-प्रक्रिया का विश्लेषण 9. मानवश्रौतसूत्र में पशुयाग की याज्ञिक-प्रक्रिया का विश्लेषण 10. मानवश्रौतसूत्र में अग्निष्टोम की याज्ञिक-प्रक्रिया का विश्लेषण 11. मानवश्रौतसूत्र की याज्ञिक-प्रक्रियाओं की वर्तमान समाज में उपादेयता। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रन्थ सूची।

616. मौर्या (कुसुम)
भारतीय ज्योतिष को ब्रह्मगुप्त का योगदान।
निर्देशिका : एसो. प्रो. पुनीता शर्मा
Th 22108

विषय सूची

1. भारतीय ज्योतिष और आचार्य ब्रह्मगुप्त 2. ब्रह्मगुप्त और सिद्धान्त ज्योतिष 3. ब्रह्मगुप्त का योगदान 4. ब्रह्मगुप्त की उपादेयता। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रन्थ सूची।

617. रीना कुमारी
शंकराचार्य प्रणीत दशश्लोकी का दार्शनिक अध्ययन।
निर्देशक : प्रो. रमेशचन्द्र भारद्वाज
Th 22590

विषय सूची

1. सृष्टि प्रक्रिया 2. अध्यास निरूपण 3. जीव मीमांसा 4. ईश्वर मीमांसा 5. आत्मतत्त्व स्वरूप 6. ब्रह्म निरूपण 7. मोक्ष निरूपण। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची।

618. वसुन्धरा

अथर्ववेद संहिता में अध्यात्म : एक समीक्षात्मक अध्ययन

निर्देशिका : डॉ. प्रतिभा रानी मिश्रा

Th 22105

विषय सूची

1. अध्यात्म-विषयक चिन्तन 2. अथर्ववेद में 'आत्मन्' शब्द का अनुप्रयोग 3.अथर्ववेद में जीवात्मतत्त्व स्वरूप 4. अथर्ववेद में परमामत्मतत्त्व स्वरूप 5. अथर्ववेद में अध्यात्म : 'आत्मा' तथा 'अध्यात्म' देवता के संदर्भ में 6. पौष्टिकानि, भैषजयानि आदि लौकिकावधारणाओं का अथर्ववेदीय अध्यात्म के संदर्भ में चिन्तन 7. अथर्ववेद के संदर्भ में अध्यात्म ज्ञान की उपादेयता। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रन्थ सूची।

619. शर्मा (नीलम)

अद्वैतदर्शन में अचार्य पद्मापाद द्वारा उपस्थापित आचारमीमांसा।

निर्देशक : डॉ. सत्यमूर्ति

Th 22106

विषय सूची

1. आचारमीमांसा और उसके भारतीय सन्दर्भ 2.अद्वैतवेदान्त और आचारमीमांसा 3. आचार्य पद्मपाद का व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व 4. कर्म एवं पुनर्जन्म सिद्धान्त 5. कर्मनिर्हरण की अवधारणा 6. आचारमीमांसा का साध्यरूप-मोक्ष । उपसंहार। सन्दर्भ ग्रन्थावली।

620. शिखा

श्रीमद्भगवद्गीता की श्रीधरी तथा नीलकण्ठी टीकाओं में शाङ्कर-दर्शन।

निर्देशक : डॉ. भारतेन्दु पाण्डेय

Th 22595

विषय सूची

1. श्रीधरी तथा नीलकण्ठी टीकाएँ 2. तत्त्वमीमांसाविमर्श 3. ज्ञानमीमांसाविमर्श 4. नीतिमीमांसाविमर्श। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रन्थ सूची।

621. सुषमा देवी

शंखस्मृति का विवेचनात्मक अध्ययन : आधुनिक सन्दर्भ में ।

निर्देशिका : डॉ. मीना कुमारी

Th 22110

विषय सूची

1. स्मृति साहित्य एवं शंखस्मृति 2. शंखस्मृति काल में सांस्कृतिक तत्त्वों की विवेचना 3. शंखस्मृति काल में कर्मविपाक की अवधारणा। उपसंहार। परिशिष्ट। सन्दर्भ ग्रन्थ सूची।

622. सोनी (इन्दु)
कृष्ण यजुर्वेदीय आरण्यकों में सांस्कृतिक तथ्यों का विवेचनात्मक अध्ययन।
निर्देशिका : प्रो. शारदा शर्मा
Th 22115

सरांश

सारांश वैदिक वाङ्गमय की श्रृंखला में संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद् में प्रत्येक एक दूसरे के पूरक अंग हैं। संहिता भाग की रचना के पश्चात-उनमें निहित धर्म, कर्म, दर्शन, अध्यातम, समाज और लौकिक सदाचार आदि विषयों का विस्तार पूर्वक निरूपण करने हेतु ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद् ग्रंथों की रचना हुई। इस श्रृंखला में आरण्यक ग्रन्थ महत्वपूर्ण अंग हैं, क्योंकि इन्होंनें मनुष्य को ब्राह्मण समाज के कर्मकाण्डीय स्वरूप से निकलकर ज्ञान प्राप्ति के लिए प्रेरित किया। अतप्रस्तुत : शोध प्रबंध में तत्कालीन सामाजिक दृष्टि को ध्यान में रखकर सांस्कृतिक तथ्यों का अध्ययन किया गया है। यहाँ समाज में भौतिक यज्ञ को सूक्ष्म यज्ञ का प्रतीक मानते हुए स्थूल से सूक्ष्म तक पहुँचने के लिए यज्ञ की प्रतीकात्मकता का सहारा लिया गया है। इन्ही सूक्ष्म तत्वों को कृष्णयजुर्वेदीय शाखा के तैत्तिरीय, मैत्रायणी तथा कठ आरण्यक कालीन संस्कृति के अभिन्न अंग के रूप में ग्रहण किया गया है, जिनका निरूपण करते हुए शोध प्रबंध को सात अध्यायों में इस प्रकार विभक्त किया गया है - वैदिक वाङ्गमय में आरण्यक कृष्णयजुर्वेदीय आरण्यकों में धर्म एवं याज्ञिक तथ्य कृष्णयजुर्वेदीय आरण्यकों में प्रतिबिंबित सामाजिक जीवन कृष्णयजुर्वेदीय आरण्यकों में प्रतिबिंबित पारिवारिक जीवन कृष्णयजुर्वेदीय आरण्यकों में आर्थिक जीवन कृष्णयजुर्वेदीय आरण्यकों में प्रकृति, काल और ज्योतिर्विज्ञान कृष्णयजुर्वेदीय आरण्यकों में दार्शनिक विचार उपसंहार, सन्दर्भ ग्रन्थ सूची। सोनी कृष्णयजुर्वेदीय आरण्यकों (इंदु) शारदा शर्मा .प्रो : में सांस्कृतिक तथ्यों का विवेचनात्मक अध्ययन निर्देशिका

विषय सूची

1. वैदिक वाङ्मय में आरण्यक 2.कृष्ण यजुर्वेदीय आरण्यकों में धर्म एवं याज्ञिक तथ्य 3. कृष्ण यजुर्वेदीय आरण्यकों में प्रतिबिम्बित सामाजिक जीवन 4. कृष्ण यजुर्वेदीय आरण्यकों में प्रतिबिम्बित

पारिवारिक जीवन 5. कृष्ण यजुर्वेदीय आरण्यकों में आर्थिक जीवन 6. कृष्ण यजुर्वेदीय आरण्यकों में प्रकृति, काल और ज्योतिर्विज्ञान 7. कृष्ण यजुर्वेदीय आरण्यकों में दार्शनिक विचार। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रन्थ सूची।